फुलवारी

कहानी

ईमानदारी का जादुई बीज

बहुत समय पहले पहाड़ों, खेतों और एक शांत नदी के बीच बसा एक सुंदर गाँव था, जिसका नाम सूरजपुर था. यह गाँव अपनी सादगी और ईमानदार लोगों के लिए जाना जाता था. इसी गाँव में अमन नाम का एक बालक रहता था, जो लगभग दस वर्ष का था. अमन पढ़ाई में अच्छा था और अपने माता-पिता से बहुत प्यार करता था. उसके पिता किसान थे और दिन-रात मेहनत करते थे, जबकि उसकी माँ घर संभालने के साथ-साथ अमन को अच्छे संस्कार सिखाती थीं. वे हमेशा अमन से कहती थीं कि जीवन में सच और ईमानदारी से बढ़कर कुछ नहीं होता, लेकिन अमन गलती होने पर डाँट के डर से कई बार सच बोलने से बचता था.

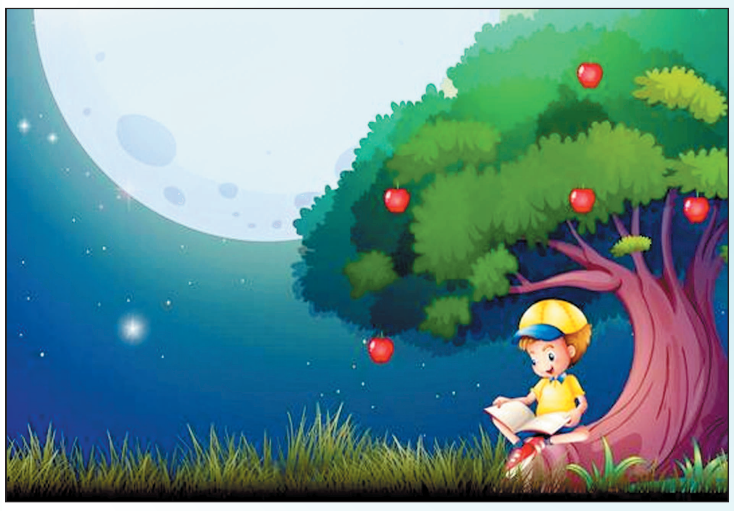

एक दिन स्कूल में मास्टरजी ने बच्चों को बताया कि वे एक विशेष प्रतियोगिता कराने वाले हैं, जिसमें हर बच्चे को एक बीज दिया जाएगा. बच्चों को उस बीज को बोकर उसकी देखभाल करनी थी और कुछ महीनों बाद अपने पौधे को स्कूल लाना था. जो बच्चा सबसे ईमानदारी और मेहनत से अपने पौधे की देखभाल करेगा, उसे इनाम दिया जाएगा. यह सुनकर सभी बच्चे बहुत खुश हो गए. अमन भी मन ही मन सपने देखने लगा कि अगर उसे इनाम मिला तो वह अपनी माँ के लिए साड़ी और पिता के लिए जूते खरीदेगा.

अगले दिन स्कूल से लौटते समय अमन जंगल के रास्ते से जा रहा था, तभी उसकी मुलाकात एक बूढ़े बाबा से हुई. बाबा बहुत शांत और समझदार लग रहे थे. उन्होंने अमन से बात की और उसके हाथ में रखा बीज देखकर कहा कि यह एक जादुई बीज है, लेकिन यह केवल तभी उगेगा जब इसे सच्चे मन और ईमानदारी से बोया जाएगा. अमन ने उनकी बात को ध्यान से सुना और बीज लेकर घर आ गया. घर पहुँचकर उसने बड़े प्यार से एक गमले में मिट्टी भरकर बीज बो दिया और रोज़ उसकी देखभाल करने लगा. दिन बीतते गए, लेकिन अमन के गमले में कोई पौधा नहीं उगा. वह रोज़ पानी देता, धूप में रखता और मन ही मन प्रार्थना करता, फिर भी कुछ नहीं होता. दूसरी ओर उसके दोस्तों के पौधे बड़े और हरे-भरे हो रहे थे. किसी के पौधे में फूल आ गए थे तो किसी का पौधा बहुत ऊँचा हो गया था. अमन धीरे-धीरे उदास रहने लगा और किसी से अपनी परेशानी साझा नहीं करता था. एक दिन उसके दोस्त ने उसे अपना पौधा देने की पेशकश की ताकि वह प्रतियोगिता में हार न जाए, लेकिन अमन का मन भीतर ही भीतर सच्चाई और झूठ के बीच संघर्ष करने लगा. प्रतियोगिता का दिन आ गया और सभी बच्चे अपने-अपने पौधे लेकर स्कूल पहुँचे. अमन खाली गमला लेकर स्कूल गया. कुछ बच्चों ने उसका मज़ाक उड़ाया, लेकिन अमन ने हिम्मत नहीं हारी. जब मास्टरजी ने उससे उसके पौधे के बारे में पूछा, तो अमन ने डर के बावजूद पूरी सच्चाई बता दी कि उसने बीज बोया था और पूरी देखभाल की थी, फिर भी पौधा नहीं उगा. उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, लेकिन उसके दिल में संतोष था कि उसने झूठ नहीं बोला.

मास्टरजी ने सबको शांत किया और बताया कि उन्होंने सभी बच्चों को उबले हुए बीज दिए थे, जिनसे पौधा उग ही नहीं सकता था. जो बच्चे पौधे लाए थे, उन्होंने कहीं न कहीं बीज बदल लिया था, जबकि अमन ही अकेला था जिसने सच्चाई और ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ा. इसलिए असली विजेता अमन ही था. उसी समय वही बूढ़े बाबा भी वहाँ आ गए और उन्होंने मुस्कुराकर कहा कि ईमानदारी सबसे बड़ा जादू है. अमन को इनाम में एक किताब, एक छोटा पौधा और सबका सम्मान मिला. उसने वह पौधा अपने घर के पास लगाया, जो आगे चलकर एक बड़ा और सुंदर पेड़ बना. उस दिन के बाद अमन ने कभी झूठ नहीं बोला और पूरे गाँव के बच्चों के लिए ईमानदारी की मिसाल बन गया.

नैतिक शिक्षा

ईमानदारी कठिन रास्ता हो सकता है, लेकिन वही हमें सच्चा सम्मान, सफलता और आत्मसंतोष दिलाती है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं, लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं, जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

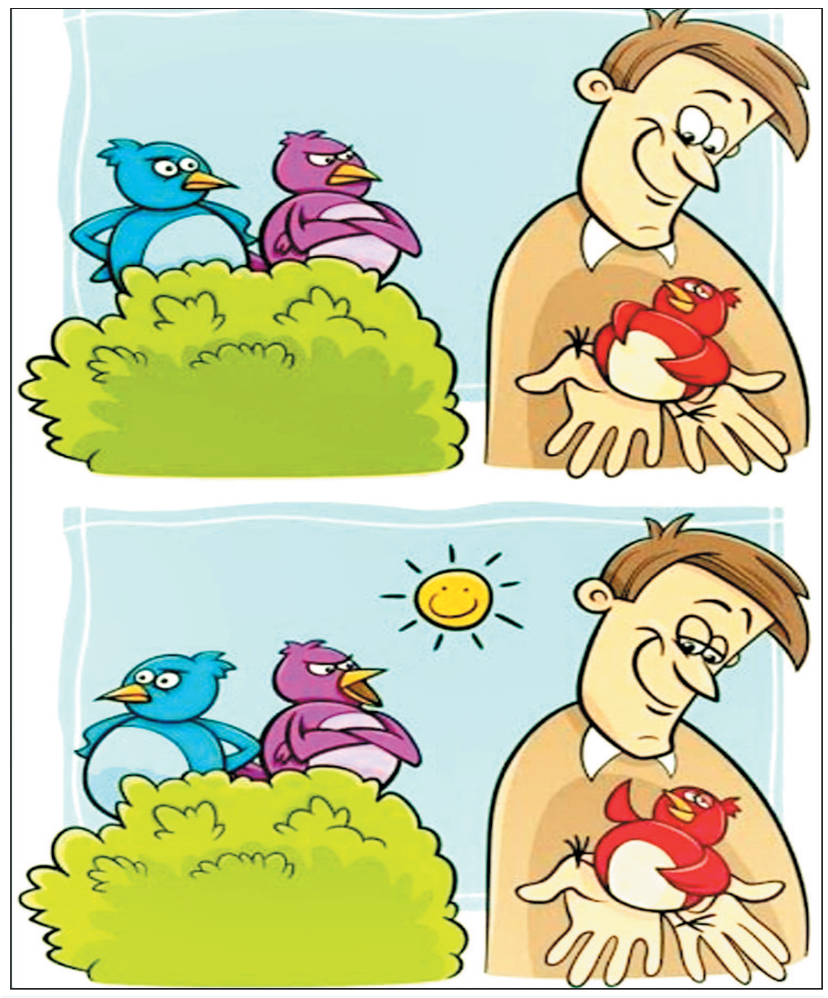

उत्तर- 1.आकाश से सूरज गायब, 2. आदमी की आंख में अंतर, 3.आसमानी कलर के पक्षी की देखने की दिशा अलग, 4. जामुनी कलर के पक्षी की चोंच में अंतर, 5. हाथ में बैठे पक्षी के पंख में फर्क

प्रेरक प्रसंग

हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद

मेजर ध्यानचंद भारत के महानतम खिलाड़ियों में से एक थे. उन्हें दुनिया भर में 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है. उनका जन्म 29 अगस्त 1905 को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (इलाहाबाद) में हुआ था. उनके पिता भी सेना में थे, इसलिए बचपन से ही अनुशासन और मेहनत का वातावरण उन्हें मिला. ध्यानचंद का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची लगन, अभ्यास और देशप्रेम से कोई भी व्यक्ति असाधारण ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है.

ध्यानचंद का झुकाव शुरू में हॉकी की ओर नहीं था, लेकिन सेना में भर्ती होने के बाद उन्होंने हॉकी खेलना शुरू किया. वे भारतीय सेना में एक साधारण सिपाही के रूप में शामिल हुए थे. शुरुआत में वे सामान्य खिलाड़ी थे, लेकिन उन्होंने रोज़ घंटों अभ्यास करना शुरू किया. कहा जाता है कि वे रात में चाँद की रोशनी में भी हॉकी का अभ्यास करते थे, इसलिए उनका नाम 'चंद' पड़ा और आगे चलकर वे ध्यानचंद कहलाए. ध्यानचंद की सबसे बड़ी उपलब्धि ओलंपिक खेलों में भारत को दिलाए गए तीन स्वर्ण पदक हैं. उन्होंने 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक, 1932 के लॉस एंजिलिस ओलंपिक और 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भारत को स्वर्ण पदक जिताया. उनकी खेल शैली इतनी अद्भुत थी कि विरोधी खिलाड़ी उनकी हॉकी स्टिक में जादू होने की बात कहते थे.

एक बार तो उनकी स्टिक तक तोड़कर देखी गई, लेकिन उसमें कुछ भी नहीं निकला—सिर्फ़ मेहनत और अभ्यास का जादू था. 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भारत ने जर्मनी को हराया. यह जीत इसलिए भी खास थी क्योंकि जर्मनी उस समय बहुत शक्तिशाली माना जाता था. उस मैच में ध्यानचंद ने शानदार प्रदर्शन कर पूरी दुनिया को भारत की ताकत दिखा दी. उनकी कप्तानी में भारतीय टीम ने इतिहास रच दिया. ध्यानचंद को उनके योगदान के लिए कई सम्मान मिले. भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया. उनके जन्मदिन, 29 अगस्त, को आज भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो युवाओं को खेल और स्वस्थ जीवन के लिए प्रेरित करता है.

मेजर ध्यानचंद का जीवन हमें यह सिखाता है कि साधारण शुरुआत होने के बावजूद, अगर इंसान ईमानदारी, अनुशासन और मेहनत से आगे बढ़े, तो वह असाधारण बन सकता है. वे न केवल एक महान खिलाड़ी थे, बल्कि देश के लिए प्रेरणा का स्रोत भी हैं.

जानकारी

आओ जानें सौरमंडल के रहस्य

हम जिस ब्रह्मांड में रहते हैं, उसका एक छोटा-सा हिस्सा सौरमंडल कहलाता है. सौरमंडल का केंद्र सूर्य है. सूर्य बहुत बड़ा और बहुत गर्म होता है. यह आग का एक विशाल गोला है, जो हमें रोशनी और गर्मी देता है. अगर सूर्य न हो, तो पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं होता. सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर एक निश्चित रास्ते पर घूमते रहते हैं, जिसे कक्षा कहा जाता है.

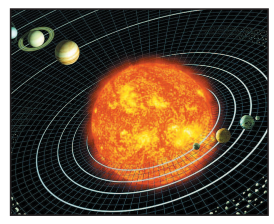

सौरमंडल में कुल आठ ग्रह हैं. ये ग्रह सूर्य से दूरी के अनुसार क्रम में लगे हुए हैं. सबसे पहले ग्रह है बुध. यह सूर्य के सबसे पास है और आकार में बहुत छोटा है. यहाँ दिन बहुत गर्म और रात बहुत ठंडी होती है. दूसरा ग्रह है शुक्र. यह आकार में पृथ्वी जैसा है, लेकिन यहाँ बहुत ज़्यादा गर्मी होती है. इसे सुबह और शाम के समय चमकते तारे की तरह देखा जा सकता है. तीसरा ग्रह है हमारी पृथ्वी. पृथ्वी सौरमंडल का सबसे खास ग्रह है क्योंकि यहाँ हवा, पानी, पेड़-पौधे, जानवर और इंसान रहते हैं. पृथ्वी को नीला ग्रह भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ पानी बहुत अधिक है.

पृथ्वी का एक प्राकृतिक उपग्रह है, जिसे हम चंद्रमा कहते हैं. चौथा ग्रह है मंगल. इसे लाल ग्रह कहा जाता है क्योंकि इसका रंग लाल दिखाई देता है. वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन की संभावना खोजने में लगे हुए हैं. पाँचवाँ ग्रह है बृहस्पति. यह सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है और इसके बहुत सारे चंद्रमा हैं. बृहस्पति के बाद आता है शनि, जो अपने सुंदर छल्लों के लिए जाना जाता है. इसके छल्ले बर्फ और पत्थरों से बने होते हैं. सातवाँ ग्रह है अरुण और आठवाँ ग्रह है वरुण. ये दोनों ग्रह सूर्य से बहुत दूर हैं और बहुत ठंडे हैं. इन ग्रहों को दूरबीन की मदद से देखा जाता है.

सौरमंडल में ग्रहों के अलावा उपग्रह, क्षुद्रग्रह, धूमकेतु और उल्काएँ भी होती हैं, जो अंतरिक्ष में घूमती रहती हैं. सौरमंडल हमें यह सिखाता है कि ब्रह्मांड बहुत बड़ा और रहस्यमय है. ग्रहों और तारों के बारे में जानना न केवल रोचक है, बल्कि हमें विज्ञान के प्रति जिज्ञासु भी बनाता है.

भूल भुलैया

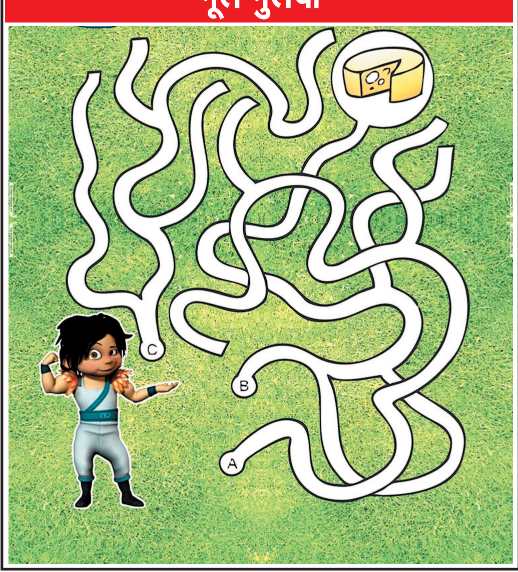

कविता

प्यारी सुबह

सुबह-सुबह जब
आँख खुले,
सूरज करे सलाम.
दाँत साफ़ कर,
नहा-धोकर,
शुरू करें हर काम.
मम्मी बोले अच्छी बात,
पापा दें समझाए.
अच्छे बच्चे बनकर हम,
सबका मन बहलाएँ.

प्रशांत महासागर के रोचक तथ्य

- प्रशांत महासागर दुनिया का सबसे बड़ा महासागर है.
- इसका क्षेत्रफल लगभग 1.6 करोड़ वर्ग किलोमीटर है.
- इसमें दुनिया की सबसे गहरी जगह है, जिसे मैरियाना ट्रेंच कहते हैं.
- प्रशांत महासागर में हजारों छोटे-बड़े द्वीप हैं, जैसे हवाई, फिजी और गुआम.
- यह महासागर तूफान और चक्रवातों के लिए प्रसिद्ध है.
- यहाँ बहुत सारे अद्भुत समुद्री जीव रहते हैं, जैसे व्हेल, शार्क और रंग-बिरंगे मछलियाँ.
- प्रशांत महासागर में कूलर और वार्म करेंट जैसी कई महत्वपूर्ण धाराएँ हैं.
- यहाँ कई ज्वालामुखी और भूकंप सक्रिय क्षेत्र हैं.
- पुराने समय में कई प्रसिद्ध नाविकों ने प्रशांत महासागर को खोजा और यातायात के लिए इस्तेमाल किया.

बूझो तो जानें

- ऐसी कौन-सी चीज़ है जो खुद चलती नहीं, पर दूसरों को चलाती है?
  उत्तर: सड़क
- वह क्या है जो जितना सुखाओ उतना गीला होता जाता है?
  उत्तर: तौलिया
- वह कौन-सी चीज़ है जो बोलती नहीं, फिर भी सब कुछ कह जाती है?
  उत्तर: तस्वीर
- ऐसी कौन-सी चीज़ है जो उड़ती नहीं, फिर भी आसमान में रहती है?
  उत्तर: बादल
- वह क्या है जो बिना पैर के चलता है और बिना पंख के उड़ता है?
  उत्तर: समय
- ऐसी कौन-सी चीज़ है जो खाने से बढ़ती है?
  उत्तर: आग

हंसी-ठिठोली

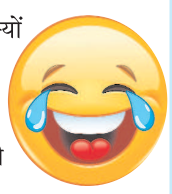

- मास्टर जी: होमवर्क क्यों नहीं किया?
  बच्चा: सर, बिजली नहीं थी
  मास्टर जी: तो मोमबत्ती जला लेते
  बच्चा: सर, माचिस भी नहीं थी...
  मास्टर जी: क्यों?
  बच्चा: क्योंकि पापा बाहर गए थे
- मम्मी: रोज़ जल्दी उठो
  बच्चा: ठीक है (अगले दिन)
  बच्चा: मम्मी, मैं उठा ही नहीं, जल्दी कैसे उठता
- टीचर: बताओ पानी कहाँ से आता है?
  बच्चा: नल से
  टीचर: और नल कहाँ से आता है?
  बच्चा: दुकान से
- टीचर: क्लास में सबसे ज़्यादा शोर कौन करता है?
  बच्चा: घंटी सर!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

बिंदु मिलाओ

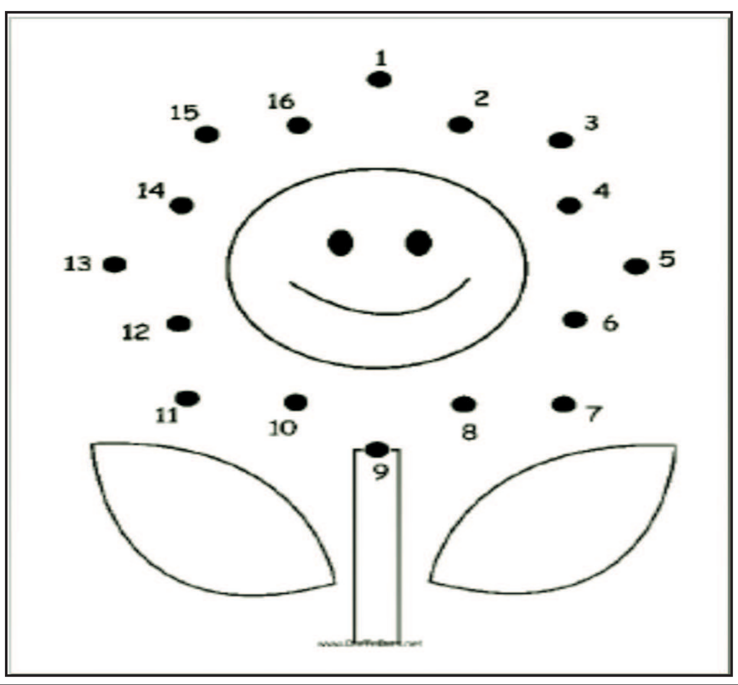

रंग भरो